International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 371-373

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 371-373
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 09-06-2020
Accepted: 27-07-2020

डॉ० पुष्पा कुमारी
अतिथि सहायक आचार्या
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय , भारत

Corresponding Author:
डॉ० पुष्पा कुमारी
अतिथि सहायक आचार्या
कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय , भारत

संस्कृत-साहित्य में कालजयी बोधकथाओं की सुदीर्घ-परम्परा

डॉ० पुष्पा कुमारी

प्रस्तावना

"ॐ असतो मा सद्मय तमसो मा ज्योतिर्गमयए
मृत्योर्मामृतं गमयेति। बृहदारण्यकोपनिषद् (1.3.28)"

मानव की चिरसंगिणी हितैषिणी के रूप में बोधकथा पुरातन काल से अखिल विश्व में समादृत रही है। दुर्बोध विषय को सरल-सुबोध बनाकर अन्त:करण को विशुद्ध करते हुए मानव को प्रबुद्ध बना देने वाली वैदिक एवं लौकिक बोध कथाएँ सर्वप्रिय एवं सर्वोपयोगी होकर सम्पूर्ण विश्व में सम्मानजनक स्थान बनाने में सफल हुई है। अनादिकाल से ही वेदों में ज्ञान की अजस्र धारा प्रवाहित है। आधुनिक भौतिक विज्ञान के युग में प्रवेश करने से पहले तक शिक्षा का तात्पर्य बोध ही था। बोध बुद्धि का विषय है। बोध और बुद्धि दोनों शब्द बुध् धातु से निर्मित है। जो बात बुद्धि में समा जाए वही बोध है। और सत्य का साक्षात्कार होना परमात्मा के दिव्य रस की रसानुभूति है।

वैदिक एवं लौकिक साहित्य में लोक-व्यवहार की अनेक बोधकथाएँ प्रशस्त जीवन की आधारशिला है। इसमें आदर्श जीवन की उद्भावना सुनिश्चित है। बोधकथाएँ दार्शनिकए वैज्ञानिक और व्यावहारिक तथ्यों को हृदयंगम कराने की स्वस्थ विद्या है। ऋगादि वेदों और रामायण-महाभारतादि आर्ष-ग्रन्थों में इतिहास तथा आख्यायिकाओं के माध्यम से दार्शनिक तथ्यों की अद्भुत उद्भावना है। सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की सरल और सरस विद्या बोधकथा है।

सनातन परम्परा में बोध-कथा का स्थान

सनातन परम्परा में बोधकथाओं की महत्ता अनादिकाल से ही अजस्र रूप में बह रही है। लोकरंजन तथा लोकमंगल-युक्त विषयवस्तु से परिपूर्ण इन साहित्यों के श्रवणए अध्ययन एवं मनन से मानव को जटिल परिस्थितियों से जूझने हेतु सम्बलए प्रबोध परामर्श प्राप्त होता रहा है। ये आख्यान मानव के अन्त:स्थल को आलोकित करके और परिस्थितिजन्य नैराश्य को मिटाकर उसे सकारात्मक ऊर्जा में संवलित कर देते हैं। प्राचीनकाल में ज्ञान-पिपासु विद्यार्थी श्रद्धा-भक्ति से युक्त हो वैदिक गुरुकुल पद्धति से आश्रमों में रहते थे। और वहाँ पर विद्यार्जन करते थे। उस समय भी गुरुजन अनेक गूढ विषयों को बोधप्रदायक दृष्टान्तों एवं रोचक बोधकथाओं के माध्यम से शिष्यों को समझाते थे। ये कथाएँ कल्पनाओं पर आश्रित न होकर सदैव सत्य अनुभवों पर आश्रित होती थी। तथा सार्वकालिक सत्य की उद्घाटक होने के करण इनकी उपयोगिता एवं प्रभाव आज भी दृष्टिगोचर हो रहा है। वैदिक ग्रन्थोंए ब्राह्मण.ग्रन्थोंए उपनिषदों एवं लौकिक साहित्य में भी इस तरह के अनेकश: आख्यान समुपलब्ध हैं। अनुपनीतए स्त्री तथा शूद्र इत्यादि का वेदाध्ययन में अधिकार न होने के करण तथा वेदार्थ की दुरूहता के करण ही भगवान् वेदव्यास जी ने उस वेदार्थ को सभी के लिए सुलभ कराने हेतु सुगम और सुबोध शैली में वेदों का उपबृंहण प्रस्तुत किया –

"इतिहासपुराणाभ्यां वेद समुपबृंहयेत्॥ "हमारे वैदिक ग्रंथों पुराणोंए रामायण एवं महाभारत के सुदीर्घ परम्परा में पदे-पदे कथाए आख्यानए उपाख्यानए दृष्टान्त आदि के रूप में विन्यस्त बोधकथाओं की विशाल थाती प्राप्त होती है। जो हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है।

वेदों में वर्णित बोध-कथा

वर्त्तमान में ऐसी बोधकथाओं के तात्पर्य को अपने जीवन में आचरित करने से समाज में प्रेम और अहिंसा का परिवेश बन सकता है। विश्व के परस्पर विरोधी राष्ट्रों में भी एक-दूसरे के प्रति मैत्रीभाव स्थापित हो सकता है। जैसा कि ऋग्वेद में उल्लिखित है।

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते॥"

ऋग्वेद 10.191.2

"समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति ॥"

ऋग्वेद

अर्थात् इन मंत्रों में राष्ट्रप्रेम और विश्व बन्धुत्व की भावना स्पष्टरुपेण परिलक्षित है। यही भावना हमें यजुर्वेद में भी मिलता है।

"दृते दृऽहं मा मित्रस्य मा चक्षुषा
सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥:

यजुर्वेद -

अर्थात् मेरी दृष्टि को दृढ़ कीजिएए सभी प्राणी मुझे मित्र की दृष्टि से देखेंए मैं भी सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूँए हम परस्पर एक-दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें।

"सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि व:।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाध्न्या॥"

अथर्ववेद (3.30.1)

अथर्ववेद में भी परस्पर द्वेष की भावना को समाप्त करने का उल्लेख मिलता है। जिस प्रकार गौ अपने बछड़े से प्रेम करती हैए उसी प्रकार आप सब एक दूसरे से प्रेम करें।

सामवेद में विश्व के कल्याणार्थ देवों का आह्वान किया गया है।

"स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्वेदा:।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि: स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥"

सामवेद

विस्तृत यशवाले इन्द्र हमारा कल्याण करेंए सर्वज्ञ पूषा हम सबके लिए कल्याणकारक होंए अनिष्ट का निवारण करनेवाले गरुड़ हम सबका कल्याण करेंए और बृहस्पति भी हम सबके लिए कल्याणप्रद हों।

औपनिषदिक-बोध

वेदों में और विशेषत: उपनिषदों में किसी गूढ़ विषय को समझाने के लिए दृष्टान्तों का प्रचुर प्रयोग किया गया है। उपनिषदों में यज्ञ-दानए अक्रोधए पुण्य और मोह आदि के प्रतिपादन से पूर्व ही ॐ संज्ञक ब्रह्मए अधीत विद्या की तेजोमयताए पारस्परिक अद्वेष तथा त्रिविध शान्ति की स्थापना कर दी गई है। जहाँ तक बोधप्राप्ति का प्रश्न हैए तो कठोपनिषद् में विश्व के प्रत्येक मनुष्य को पितृभक्तए सच्चे दानशीलए यज्ञप्रेमीए सत्यवादीए त्यागीए आध्यात्मिकए और लौकिक मोह से मुक्त एवं आत्मज्ञानी नचिकेता से प्रेरणा मिलती है। कठोपनिषद् में निरूपित अनेक ऐसी सूक्तियाँ हैंए जो मानव को अनेकविध ज्ञान कराने में समर्थ हैं।

यथा –

"श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेतस्तौ सम्परीत्य विविनक्ति धीर:
श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥
"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्।"
"क्षुरस्य धारा निशिता दूरत्यया दुर्गपथस्तत्कवयो वदन्ति।"

कठोपनिषद्

इसी प्रकार की ज्ञानवर्धक अनेक सूक्तियाँ अन्य उपनिषदों में भी दृष्टिगोचर होती है। यथा –

"सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमद:। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।
आचार्य देवो भव। अतिथिदेवो भव।

तैत्तिरीयोपनिषद – 1.11.3

स्मृति-बोध

स्मृतिग्रन्थों में भी इस प्रकार की भावना का पर्याप्त उल्लेख प्राप्त होता है।

"आचार: परमो धर्म: श्रुत्युक्त: स्मार्त एव च।
तस्मादस्मिन् सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विज:॥"
मनुस्मृति – 1.108
"अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविन:
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशोबलम्॥"

मनुस्मृति

इसी संदर्भ में पुराणों में भी पदे-पदे असंख्य उदाहरण मिलते हैं।

यथा –

"श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैतत्प्रधार्यताम्।
आत्मन: प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्॥"
पद्मपुराण
"सत्यं ब्रूयात प्रियं ब्रूयान्न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयादेष धर्मो विधीयते॥"
मनुस्मृति 4.138

पौराणिक बोध

वेदए वेदांगए महापुराणए रामायणए महाभारत आदि ग्रन्थ और बृहत्कथा आदि लोकतत्वप्रधान ग्रन्थ बोधकथाओं के स्रोतरूप माने गए हैं। रम्या रामायणी कथा और महाभारत से प्रेरित हुए मनीषियों ने अनेक बोधकथासंग्रह अनेक भाषाओं में रचे हैं। पौराणिक साहित्य तो बोधकथाओं का भंडार ही है।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥"
महाभारतए भीष्मपर्व
"अहिंसा परमो धर्म: (महाभारत) 116.38
सर्वे क्षयान्ता निचया: पतनान्ता: समुच्छ्राया:।
संयोगा विप्रयोगान्ता मरणान्तं च जीवितम्॥"

वाल्मीकि रामायणए अयोध्याकाण्ड – 7.52.11ए 2.105.16

लौकिक संस्कृत वाङ्ग्मय के प्राचीन ग्रन्थों में बोधकथाओं की विशाल थाती प्राप्त होती हैए जो हमारी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर है। संस्कृत साहित्य में कालजयी नीतिकथाओं की अजस्र धारा के अंतर्गत श्री विष्णु शर्मा कृत पंचतंत्र और श्री नारायणकृत हितोपदेश में वर्णित बोधकथाओं के देश और विदेश की अनेक भाषाओं में हुए अनुवाद से भारत की उज्ज्वल सम्पन्न सभ्यता का परिचय दूर छोर तक पहुँचा है।

जैसे पंचतंत्र में वर्णित है –

"उपदेशो ही मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तयेए
पय: पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।।"
(पंचतंत्र)
"यौवनं धन सम्पति: प्रभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।"

(हितोपदेश)

ये बोधकथाएँ मानवमात्र के लिए रसायन की तरह उपयोगी होती हैए जैसे रसायन में रुग्ण व्यक्ति को स्वस्थ करने तथा निरोगी व्यक्ति को अस्वस्थ न होने की अद्भुत क्षमता मौजूद होती हैए उसी प्रकार बोधकथाओं में दिग्भ्रमित मानवों को उचित रास्ते में लाकर सही अर्थों में मनुष्य बनाने एवं सद्गुणसम्पन्न व्यक्ति के गुणों में अभिवृद्धि करते हुए उसे मानव से महामानव बनाने की अपार सामर्थ्य निहित होते हैं।

इसी क्रम में विकास-काल के महाकाव्योंए काव्यों एवं अपकर्ष काल के महाकाव्यों में भी बोधकथाओं की अविरल धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल पर्यन्त हमारे साहित्य ने आत्मनिर्भरतापूर्वक बोधकथाओं के द्वारा पुरुष को पुरुषोत्तम बनाया। अनादिकाल से ही उपदेशात्मक बोधकथा की परम्परा आत्मबोध से जुड़ी हुई है। यथा –

"वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को न विज्ञातुमर्हति।।"
उत्तररामचरितम् 2.7
"भवन्ति नम्रास्तरव: फलागमैर्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घना:।
अनुद्धता: सत्पुरुषा: समृद्धिभि: स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्।।"
अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5.12)
"सहसा विदधीत न क्रियामविवेक: परमापदांपदम्।
वृणुते हि विमृश्यकारिणं गुणलुब्धा: स्वयमेव सम्पद:।।"
किरातार्जुनीयम्। 2.30

इसी तरह विद्वज्जनों ने वेद-पुराणए रामायणए महाभारत आदि आर्ष वाङ्गमय से प्रेरणा लेकर जनकल्याणकारी कृतियों की संरचना की है। जो धर्मए अर्थए कामए मोक्ष की प्राप्ति में सहायक रही है।

सारांश

उपर्युक्त समस्त बोधकथाओं का सहस्त्रों वर्षों से भारत में प्रबुद्ध जनों से लेकर जनसामान्य तक व्यापक प्रचार तो हुआ हीए साथ हीं सांस्कृतिक थाती ने विदेशी यात्रियों एवं विद्वान लेखकों को भी अत्यन्त विस्मित एवं प्रभावित किया।

निष्कर्षत

इसके परिणामस्वरूप इन कथा-साहित्यों का संसार की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ। ये बोधकथाएँ हमें जीवनदान देते हैंए और हमारी जीवनशैली बदल देते हैं। असत् से सत् की ओर प्रेरित करते हैंए तथा हमारे अन्त:करण को निर्मल तथा उदात्त बनाते हैं।

बोधकथाएँ मनुष्य को सच्चा मानव बनाने में सहयोग प्रदान करती हैंए मानवीय संवेदना को जगाती हैंए भाईचारे की सीख देती हैए और सच्ची सुख-शांति के विस्तार में सहायक होती है। अर्थात् इन बोधकथाओं के माध्यम से गूढ़तम ज्ञान को उद्घाटित करना तथा व्यावहारिक ज्ञान की प्राप्ति कराना ए यही इंका तात्पर्यमूलक उद्देश्य रहा है।

संदर्भ-सूची

1. कल्याण
2. बृहदारण्यकोपनिषद् 1.3.28
3. ऋग्वेद 10.191.2
4. ऋग्वेद
5. यजुर्वेद
6. अथर्ववेद 3.30.1
7. सामवेद
8. कठोपनिषद्
9. तैत्तिरीयोपनिषद्
10. मनुस्मृति
11. मनुस्मृति
12. पद्मपुराण
13. मनुस्मृति - 4.138
14. महाभारत-भीष्मपर्व
15. महाभारत 116.38
16. वाल्मीकि रामायण और अयोध्या काण्ड (7.52.11) (2.105.16)
17. पंचतंत्र
18. हितोपदेश
19. उत्तररामचरितम्- 2.7
20. अभिज्ञानशाकुन्तलम् (5.12)
21. किरातार्जुनीयम्- 2.30